समकालीन हिंदी कविता और दिनेश कुशवाह

हिन्दी विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

के अंतर्गत मानविकी संकाय के हिन्दी विषय में

पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

शोध निर्देशक

डॉ0 सुरेन्द्र प्रसाद सुमन

एसोसियेट प्रोफेसर

विश्वविध्यालय हिन्दी विभाग

ल0 ना0 मि0 वि0 दरभंगा

शोधार्थी

राज कुमार

रोल क्रमांक- E2209081

समकालीन हिंदी कविता और दिनेश कुशवाह

प्रस्तावना (Introduction):-

कवियों का एक दौर हुआ करता था जब रसानुभूति कविताओं के प्रमुख तत्व के रूप में विद्यमान थी । कवि अपनी क्षमता के अनुसार अलंकृत शब्दों , छंदों के माध्यम से कविता की रचना कर वाहवाही लूटा करते थे । इस रसिक दौर में कवियों और श्रोताओं का कोई सामाजिक सरोकार नहीं था। यथार्थ से दूर कवि और श्रोताओं के लोक में कोई दुख या समस्या नहीं थी । इन कवियों ने न ही युद्धों का कारण जाना और ना ही इनका गरीबी से कोई वास्ता था । वे धर्म में फैले शोषण-तंत्र से भी अनभिज्ञ बने रहे और सामाजिक व्यवस्था के बदसूरत रूप से दूर रहे । पौराणिक आख्यान , हिंदू शौर्य-गाथाओं और निरर्थक मिथ्या फैंटेसी ही उनके कवियों की आधारशिला रही। देश के किसान ,शोषित-पीड़ित-वंचित समाज के इतिहास व उसके श्रम और संघर्ष से पूर्णतः अनजान रहे ।

हिंदी साहित्य में नई चेतना का उद्भव तब मानना चाहिए जब निम्नवर्गीय सामाजिक पृष्ठभूमि से आए कवियों ने बेड़ियां तोड़ कर दस्तक दी। उन्होंने ना सिर्फ रचनाएं की अपितु अपने दबे हुए इतिहास को खंगाला, टटोला और दुनिया के

सामने प्रस्तुत करने का काम किया। हिंदू शौर्य गाथाओं का पुनर्पाठ करके उसके मिथकों और उसमें निहित कटु सत्य को उजागर किया । भारतीय समाज में सदियों से व्याप्त ब्राह्मणवाद, स्त्रियों की पीड़ा, श्रमिकों की दुर्दशा आदि को काव्य की मुख्य धारा से जोड़ने का काम किया।

समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर दिनेश कुशवाह बहुजन रचनाशीलता के महत्वपूर्ण कवि हैं। ये समकालीन हिंदी कवियों में सबसे अलग स्वर के लिए जाने जाते हैं । इनके मूलतः दो काव्य संग्रह 'इसी काया में मोक्ष' और 'इतिहास में अभागे' क्रमशः 2007 और 2017 में प्रकाशित हुए हैं।

दिनेश कुशवाह ने अपनी कविताओं के माध्यम से सर्वहारा वर्ग के स्वर को मुखर अभिव्यक्त प्रदान करने का रचनात्मक प्रयत्न किया। "कानपुर की एक मेहतर बस्ती में रहने के दिन याद करते हुए" कविता में कवि ने दलितों की पीड़ा की अनुभूति को व्यक्त किया है। तदयुगीन भारतीय सामाजिक सत्ता पर चोट करते हुए कुछ पंक्तियां यूं हैं-

"रखा गया इन्हें कुछ ऐसे

कि उन्हें पता ही ना चले

कि वे किस नरक में जी रहे हैं।

सिर्फ इन्होंने देखा है

कैसी होती है पीव-खून-पेशाब और मैले की नदी।

यहां लोग बोतल से करते हैं वैतरणी पार

वाराह को पीठ पर हाथ रख सुस्ताते हैं दो घड़ी।"

कवि ने 'एकलव्य की तरफ से' नामक कविता के द्वारा समाज में व्याप्त शैक्षणिक-भेदभाव को उजागर किया है। उन्होंने अपने "इसी काया में मोक्ष" काव्य संग्रह में स्त्री और प्रेम पर विस्तृत रूप से चर्चा की है । कवि दिनेश कुशवाह ने समाज के विभन्न वर्गों की स्त्रियों को माध्यम बनाकर काव्य रचना की है।

'स्वर्ग' और 'भोग' नामक कविता में उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की समझ और भौतिक दर्शन का परिचय दिया है। इसमें कवि के अद्भुत तर्कों और बिंबो का प्रयोग अद्वितीय है। स्वर्ग की तुलना पूंजीपतियों की रासलीला से करने का जोखिम हिन्दी कविता में दुर्लभ है।

अपने दूसरे काव्य संग्रह "इतिहास में अभागे" में कवि ने अभागा उन्हें कहा है जो वास्तव में इतिहास के नायक हैं परंतु इतिहासकारों और साहित्यकारों के द्वारा निरंतर उपेक्षा के शिकार हुए । इसमें कुशवाह जी ने इन अभागों का जैसा भावप्रवण स्मरण किया है, मुख्यधारा की कविता में उसकी अनुपस्थिति सर्वविदित है।

प्रसिद्ध आलोचक राजेंद्र यादव के कथनानुसार ‘पराजितों का कोई इतिहास नहीं होता’ , इस कथन को दिनेश कुशवाह अपनी कविता के माध्यम से गलत सिद्ध करते हैं । वे कहते हैं चूंकि इतिहास लिखने का काम विजेताओं ने किया है इसीलिए पराजितों की उपेक्षा अपेक्षित है। वास्तव में इतिहास पराजितों का ही होता है क्योंकि इसिहास निर्माण में संघर्ष और बलिदान की भूमिका ही सबसे महत्वपूर्ण है।

निस्संदेह ,तमाम इतिहासकारों ने अत्याचारियों और हत्यारों को नायक बना दिया। रामायण का नायक भी ‘बहेलिया’ है ना की प्यार के लिए बलिदान देने वाली क्रौंच। कुशवाह जी ने अपनी कविता ‘बहेलियों को नायक बना दिया’ में ईश्वर को सबसे बड़ा बहेलिया बताया है -

“ईश्वर सबसे बड़ा बहेलिया है

और दीन-हीन को सताकर

मारने वाले उसके कृपापात्र।“

भेदभाव सर्वत्र व्याप्त है, कहीं पर जाति-धर्म के नाम पर, कहीं पर अमीर -गरीब के नाम पर तो कहीं रंगभेद के नाम पर है। कवि ने अटलांटा के ओलंपिक के सौ मीटर दौड़ के विजेता काले युवक डॉनवन बेली के लिए एक कविता लिखी , जिसमें अप्रत्यक्ष रूप से ओमप्रकाश वाल्मीकि को भी यह कविता समर्पित की गई है,

क्योंकि जहां बेली के साथ रंग के कारण भेदभाव होता था वहीं वाल्मीकि के साथ जाति के कारण। परंतु दोनों ने अपनी योग्यता साबित करते हुए बिना हिंसा का सहारा लिए जग में अपनी पहचान पायी।

दिनेश कुशवाह जी का दूसरा काव्य संग्रह 'इतिहास में अभागे' मूलतः दो खंडों में विभक्त है। प्रथम खंड 'आज भी खुला है, अपना घर फूंकने का विकल्प' में कवि जी ने कबीर की तरह ही ब्राहमणवाद और पूंजीवाद से लड़ने का आवाहन किया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कवि व साहित्यकार खुलकर कबीर के आदर्शों को अपनाने से डर रहे हैं। इन्हीं परिस्थितियों के कारण कवि ने कबीर से उचित मार्ग पूछा है -

मैं कबीर से पूछने गया कि क्या करूं दादा

अब पांडे और कसाई हो गए

हिंदू और तुर्कों की राह और बिगड़ गई

तब एक पाहन पूजा जाता था

अब लाखों किस्म के पत्थर पूजे जाते हैं।

प्रमुख अंबेडकरवादी चिंतक, लेखक व आलोचक ‘कंवल भारती’ ने कवि दिनेश कुशवाह के बारे में कहा है कि ‘कवि की चिंता लोकतंत्र के विनाश को लेकर है, जो बहुसंख्यक गरीब, शोषित-पीड़ित दलित एवं पिछड़ी बहुसंख्यक आवाम की मुक्ति की बहुत बड़ी आशा है।

क्षेत्र एवं संभावना :-

प्रस्तुत शोध में दिनेश कुशवाह और उनके समकालीन कुछ प्रमुख कवियों की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा, जिसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रमुख स्वरों की अभिव्यक्ति पर विशेष बल दिया जाएगा -

स्त्री चेतना ,शोषित तथा दलितों की आवाज, लोक चेतना, राजनीतिक दर्शन, यथार्थबोध ।

कुशवाह ने अपने काव्यों में स्त्री के विविध रूपों की चर्चा की है। दलितों और शोषितों के उन अनछुए पहलुओं को उजागर किया है जिसमें अन्य कवि असफल रहे या यूं कहे किसी ने उसको महत्व ही नहीं दिया। लोक चेतना और दर्शन के माध्यम से उनकी काव्य शक्ति की परीक्षा की जा सकती है । साथ ही अन्य समकालीन कवियों से कुशवाह जी अलग हैं , इसकी छानबीन की जा सकती है ।

परिकल्पना (Hypothesis):

दिनेश कुशवाहा की कविताओं को उसकी न्याय चेतना विशिष्ट बनाती है। क्या साहित्य में न्याय जीवन के अन्यायों का प्रतिकार नहीं हो सकता है? उनकी कविता का भूगोल वैश्विक है। उनकी संवेदना के पात्र संसार के वे सभी मेहनतकश लोग हैं जिन्हें इतिहास से बेदखल कर दिया गया दिनेश कुशवाहा की विलक्षण काव्य-दृष्टि जनसामान्य में आकार ले रहे प्रश्नों और पीड़ाओं को बहुत सूक्ष्मता से लक्षित कर सकी है।

उनकी 'कानपुर की एक मेहतर बस्ती में रहने के दिन याद करते हुए' शीर्षक कविता अपने शिल्प का अतिक्रमण करते हुए भारतीय सभ्यता के वास्तविक संकटों को संबोधित है। यह कविता इतिहास के सभी छद्म आवरणों को हटा कर शोषण-दमन के बोझ से दबे-कुचले जीवन में प्रवेश करती है- "यहां आरे से/चीरे जाते हैं लोग/ पेरे जाते हैं कोल्हू में/यहां जीते हैं लोग/अपने पेट में पचाते हुए/धरती का हैजा"

शिल्प और संवेदना के स्तर पर यह कविता मुख्यधारा के हिन्दी साहित्य की जड़ता को नष्ट करने का सचेत प्रयत्न है। शोषण के कारणों को ढंक कर, समाज को दिग्भ्रमित कर मनुष्यता की रक्षा कैसे हो सकती है? समकालीन कविता में दिनेश कुशवाहा इसलिए अपनी एक मौलिक आभा निर्मित कर पाते हैं क्योंकि उनका कवि केवल राजनीतिक शब्दावली के बजाए धरती के अभागे लोगों के जीवन में अपनी गहरी आस्था रखता है। यही कारण है कि इस कविता के शीर्षक में वे स्पष्टतः 'मेहतर बस्ती' लिखते हैं, दलित जीवन से जुड़े प्रतीक गढ़ते हैं, जाति की क्रूर हिंसा का चित्रण शोषितों की भाषा में करते हैं। 'जाति' भारतीय समाज का नाभिकीय प्रश्न है। आंबेडकर की अविस्मरणीय कृति 'एन्हिलेशन ऑफ कास्ट' इस

तथ्य को विश्लेषित करती है कि शोषित वर्ग क्रांति क्यों नहीं कर सका, इन अभिप्रायों की अनुगुंज दिनेश कुशवाहा की कविता में महसूस की जा सकती है-
“रखा गया इन्हें कुछ ऐसे/कि उन्हें पता ही न चले/कि वे किस नरक में रह रहे हैं।”

कहना न होगा कि वर्चस्ववादी संस्कृति शोषितों और श्रमिकों की चेतना को नष्ट करती है। सचाई यही है कि शोषित जीवन की वास्तविक त्रासदी का कारण ज्ञान और चेतना का अभाव है। यही वो बिंदु है जहां दिनेश कुशवाहा अपनी सम्पूर्ण सर्जनात्मक ऊर्जा से प्रतिरोध रचते हैं। इनकी कविताओं में चेतना की यह द्वंदात्मकता आकार ग्रहण करती है। इसलिए उनकी कविता सचेतन मनुष्य की विराट कामना है :

“बहुत दिनों से मैं/किसी को अपना कलेजा/निकालकर दे देना चाहता हूं/मुद्दतों से मेरे सीने में भर गया है अपार मर्म/मैं चाहता हूं कोई/मेरे पास भूखे शिशु की तरह आए/कोई मथ डाले मेरे भीतर का समुद्र और निकाल ले सारे रतन।”

‘रतन’ शब्द के प्रयोग से कविता विलक्षण विस्तार पा जाती है, यह लोकपक्षीय चेतना की नागार्जुन शैली है।

किसी रचनाकार की वैचारिकी का निर्माण इतिहासबोध के बगैर संभव है क्या? जनपक्षधर इतिहासबोध की निर्मिति में दिनेश कुशवाहा की ‘इतिहास में अभागे’ शीर्षक कविता का अद्वितीय स्थान है। वे यहां इतिहास की पूरी संकल्पना को न सिर्फ प्रश्नांकित करते हैं बल्कि इतिहास को पुनर्परिभाषित करने का बौद्धिक संकल्प रखते हैं:

“पुरातत्ववेत्ता जानते हैं/जिनकी पीठ पर बने/बकिंघम पैलेस जैसे महल/वे अभागे भूत-प्रेत-जिन्न/कुछ भी नहीं हुए इतिहास के।”

इसी श्रृंखला में वे भारतीय इतिहासबोध की षड्यंत्रकारी भूमिका को ठीक-ठीक चिन्हते हैं:

“इतिहास नायकों का भरण-पोषण करने वाले/इनके अभागे पिताओं के नाम पर/ नहीं रखा गया

हमारे देश का नाम भारतवर्ष।/ हमारी बहुएं और बेटियां/जिन्हें अपनी पहली सुहागिन रात/ किसी राजा-सामंत/या मंदिर के पुजारी के/साथ बितानी पड़ी/इस धरती को उनके लिए नहीं कहते भारत माता।”

कहा जा सकता है कि दिनेश कुशवाहा प्रतिसंसार के कवि हैं। उनके रचना संसार में समाज की विद्रूपताएं, मूल्यों का क्षरण और नैतिक संकटों का व्यापक चित्रण है। किन्तु उनकी कविताएं अपने मूल स्वर में भावुक क्रंदन नहीं बल्कि प्रतिरोध का मेनिफेस्टो है। इनके यहां प्रतिरोध महज प्रतिक्रिया नहीं, शोषणमुक्त समाज की मौलिक कल्पना की भांति आता है। वे कैसे मनुष्य या समग्रता में कहें तो समाज के दर्शनाभिलाषी हैं? :

“बहुत दिनों से मैं/किसी ऐसे आदमी से मिलना चाहता हूं/जिसे देखते ही लगे/करोड़ों जन्मों के पाप मिट गए/कट गए सारे बंधन/कि मोक्ष मिल गया इसी काया में।”

प्रस्तुत शोध में दिनेश कुशवाहा की काव्य यात्रा के जरिए समकालीन कविता, साहित्य और समाज का कई स्तरों पर विश्लेषण करने का प्रयास किया जाएगा। संभावित अध्याय-योजना में साहित्य के समाजशास्त्रीय पक्ष को समझने का प्रयत्न किया जाएगा।

उद्देश्य (Objective):-

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रमुख समकालीन कवि दिनेश कुशवाह के काव्य में स्त्री चेतना के स्वर, दलित विमर्श, लोक चेतना, सामाजिक चेतना एवं राजनैतिक दर्शन आदि के माध्यम से समकालीन परिप्रेक्ष्य में उनकी उपयोगिता सिद्ध की जाएगी । साथ ही कवि की भाषा ,शैली ,तर्कों और बिंबो के अध्ययन से कविता की जांच परख की जाएगी ।

प्राथमिक स्रोत सामग्री :-

दिनेश कुशवाह :- इसी काया में मोक्ष (2007),राजकमल प्रकाशन

इतिहास में अभागे(2017),राजकमल प्रकाशन

शोध प्रविधि(Research Methodology):-

प्रस्तुत शोध कार्य के दौरान दिनेश कुशवाह की समस्त रचनाओं तथा कुछ अन्य कवियों की रचनाओं का अध्ययन किया जाएगा। इस शोधकार्य के दौरान ऐतिहासिक , तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक ,समाजशास्त्रीय आदि प्रमुख प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा।

संभावित अध्याय योजना :-

भूमिका

प्रथम अध्याय :- समकालीन हिंदी कविता

- परिचय
- विवेचन

द्वितीय अध्याय :- कवि दिनेश कुशवाह

*परिचय

*रचना संसार

तृतीय अध्याय :- दिनेश कुशवाह की कविता में संवेदनाएं

*लोक चेतना , स्त्री चेतना, यथार्थ बोध,

सामाजिक दृष्टि, राजनीतिक संवेदना, जीवन दर्शन

चतुर्थ अध्याय :- दिनेश कुशवाह के काव्य का शिल्पगत विवेचन

- भाषा * शैली * तर्क * बिंब * प्रतीक

पंचम अध्याय :- समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवियों में कुशवाह का स्थान

उपसंहार

विषय से संबंधित पूर्व में किए गए कार्य :-

विभिन्न शोध संदर्भ ग्रंथ, शोधगंगा और अन्य माध्यमों से मिली जानकारी के अनुसार अभी तक इस विषय पर पूर्व में किए गए कार्य नगण्य जान पड़ता है। कवि दिनेश कुशवाह समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इस विषय पर मेरा शोधकार्य पूर्णतः मौलिक होगा ।

संदर्भ ग्रंथ:-

डॉ सुरेंद्र प्र. सुमन: जनवाद और समकालीन हिंदी कविता(2015),ज्योतिपर्व प्रकाशन

अरविंद त्रिपाठी : हमारे समय की कविता(1998), पीतांबरा प्रकाशन

ए. अरविंदाक्षण: समकालीन हिंदी कविता (1998) ,राधाकृष्ण प्रकाशन

नंददुलारे वाजपेई : नई कविता(1976),मैकमिलन

विश्वनाथ प्र. तिवारी: समकालीन हिन्दी कविता(1982), राजकमल प्रकाशन

डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी: भाषा और संवेदना(1981), लोकभारती प्रकाशन

अरुण कमल : कविता और समय(1999), वाणी प्रकाशन

पत्र-पत्रिकाएं:-

समकालीन चुनौती प्रतिरोध की त्रैमासिक पत्रिका

आलोचना ,कथादेश, नया ज्ञानोदय, वागार्थ

हंस ,तद्भव

वर्तमान साहित्य

बनास जन

समकालीन जनमत ।

शोध निर्देशक:-	**शोधार्थी :-**
डॉ सुरेंद्र प्रसाद सुमन	**राज कुमार**
एसोसिएट प्रोफेसर	**पैट क्रमांक - E2209081**
हिंदी विभाग	
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,दरभंगा	